श्रीश्री गौरविधुर्जयति

नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीश्रीराधाकुण्डाश्रयी

श्रीगुरुमहाराज पण्डितप्रवर, महनीय महान्त

१०८ श्रील अनन्तदास बाबाजी महाराजेर

गुणलेश-सूचक कीर्तन

प्रारम्भिक

ओ मोर करुणामय श्रीगुरुदेव महाशय
"श्रीअनन्तदास" पुण्य नाम।

(जगत पवित्र हय, तोमार नाम श्रवणे जगत पवित्र हय। तोमार नाम श्रवणे पवित्र हय।)

कि कव प्रसङ्ग तव अनुपम अभिनव
भाव-भक्ति-प्रेम-रसधाम ॥१॥

अहो कि मोहन मूर्त्ति! दर्शने आनन्द-स्फूर्त्ति
स्निग्धोज्ज्वल श्यामलिम ठाम।
देखिले भुलिते नारे आगुसरि पदे पड़े
अनुभवे प्राणेर आराम ॥२॥

(एकबार देखिले, कोनदिन से नाहि भुले, कोन काले भोला जाय ना एकबार देखिले)

स्मित मुखे मृदुभाष श्रवणे कैतवनाश
सुदृढ़ सुठाम सुगठन।
अचञ्चल, अकिञ्चन आमानी मानद ह'न
व्रजलेहे विह्वल तन्मन॥३॥

उन्नत उज्जवल रसे कभु डुबे कभु भासे
कभु काँदे कभु हासे ताय।
अबाध मानस स्फूर्ति अन्तर्गूढ़ भोगमूर्त्ति
स्मरि प्राण विदरिया जाय ॥४॥

अपार पाण्डित्य जेन असीम वैराग्य तेन
सरल, सुषम, सुर्निमल।
अकपट, जातरति तुलना नाहिक कति
जाचे निति जीवेर मङ्गल ॥५॥

सकल संशयहरा वाणी ताँर मधुक्षरा
हृदयेर ताप-तमः नाशे।

(कि मधुर तार हरिकथा, वाचनभङ्गि अमिया गाथा, नयन इङ्गिते चाय। पराण काड़िया लय। हासि हासि कथा कय। पराण काड़िया लय। श्रद्धाभक्तिर उदय हय। तार मुखेर कथा श्रवणे, श्रद्धा भक्तिर उदय हय।)

'गुरुःस्यात् गौरवाम्बुधि' अनुभवे मग्न
निरवधि
से मुरति मन्त-ताँर पाशे ॥६॥

(शब्दब्रह्मे परब्रह्मे, सदा उपशमाश्रय। शिष्येर करे भवक्षय, सद्गुरुर लक्षण जत, तार मध्ये प्रकाशित)

धन्य झारिखण्ड स्थान गौर-पदाङ्कित धाम
स्वरूप जागानो जेइ भूमि।

(श्री चैतन्यचरणचिन्तामणिर विचरण भूमि, श्रीझारिखण्डेर भूमि, श्रीचैतन्यचरणचिन्तामणिर विचरण भूमि)

सिंह-व्याघ्र हिंसा भुले जेथा लुठे धरातले
काँदिये गौराङ्ग पद-चुमि ॥७॥

(श्रीगौराङ्गेर लीला भूमि, प्रेमप्रदानलीलार भूमि, एमन लीला हयनि कोथा, झाड़िखण्डपथे यथा, एमन लीला हयनि कोथा)

तथि सिंहभूम नाम बाबुजार्गो धन्य ग्राम
सुवर्णरेखार कुले स्थिति।
सेथाय क्षत्रिय वंशे अवतरि सेइ देशे
पूराइला भक्तेर आकुति ॥८॥

(राजवंशे उदय हैले, व्रजनिकुञ्ज हते स्वामिनीर सेविका एल,

निभृतकुञ्ज हते, श्रीराधादास्य प्रचारिते, एल निभृत निकुञ्ज हते, अनर्पितचरी प्रचारिते, एल निभृत निकुञ्ज हते)

ऊनिशशो पँचिश साल सर्व सुमङ्गल काल
गगनेते जलद-सञ्चार।
स्निग्ध वरषार वेला मेघे-बिजुरिते खेला
कभु देखि वर्षे वारिधार॥९॥

सेइ साले सेइ काले झुलनपूर्णिमा वेले
ताँर दिव्य आविर्भाव जानि।

(हिन्दोललीलाकाले, जखन युगलकिशोर झुले, वर्षाहर्षदवने जखन युगलकिशोर झुले।)

जातकेर मुख हेरि बले सबे हरि हरि
बालागणे देय उलुध्वनि ॥१०॥

(राखि पूर्णिमार दिने, गगने पूर्णचन्द्रेर उदय। श्रावणी पूर्णिमार दिने, श्रवणा नक्षत्र दिने, श्रावणी पूर्णिमार दिने।)

अमूल्यरतन नामे ख्याति हइल पूर्वाश्रमे
जत निज जनेर इच्छाय।
सुरुचिर रूप देखि जुड़ाय सबार आँखि
आगुसरि सबे कोले लय ॥११॥

विद्यारम्भ शैशवेते बालक प्रसन्न जाते
क्रमे क्रमे कैशोरागमन।
निति जाय पाठशाले समवयः सङ्गी-मेले
कैल रामायण-अध्ययन ॥१२॥

यौवन-उन्मेष जबे पराण उन्मुख तबे
शास्त्रपाठे, हरिकथा-गाने।

(गोस्वामी तुलसीदासेर रामायण, हल तोमार कण्ठधन, श्रीतुलसीदासेर रामायण। नाना नाटक अभिनय,)

ग्रामे-भिनग्रामे यथा हय कभु हरिकथा
जाय अभिभावकेर सने ॥१३॥

सुठाम स्वरूप देखि सबे अनिमिख आँखि
हैल परिणय-आयोजन।
प्रवेश-गार्हस्थ्यधर्मे एबे ताहा जानि मर्मे
करे यथोचित आचरण ॥१४॥

(योगमार्ग पथधरे, हओ तुमि अग्रसरे, योगमार्ग पथ धरे, प्राणायामप्रणव जपे हओ तुमि अग्रसरे,)

काल कारओ बाध्य नय; सुकृति-उदय हय
अपतित ग्रन्थानुशीलने।
परार्थ अर्जन तरे क्रमे नाना पथ धरे
नाहि पाय शान्तिर सन्धाने ॥१५॥

प्राणे अनुभव हय दुःखोदर्क-नसुखमय
ए संसारे, तापेर निदान।

(ए जगते सुख नाइ। वृथा करि धाओया धाइ। वृथा सम्बन्ध पाताइ, ए जगते सुख नाइ)

(श्री) गुरुपादाश्रय लागि चित्त सदा अनुरागी
(जाते) आत्यन्तिक कल्याण विधान ॥१६॥

एबे कलियुगोचित नामधर्मे सुनियत
आपनारे निरत राखय।
आसक्ति पलाय दूरे अनुरक्ति निति बाड़े
हृदय वैराग्य दृढ़ हय ॥१७॥

अतीव विषाद चिते दिने जाय हेनमते
अकस्मात् दैवेर विथार।

(अकस्मात् महत्कृपा हैल। मेश्या ग्रामे हरिसभाय, अकस्मात् महत्कृपा हैल, रेला ग्रामे हरिसभाय, अकस्मात् महत्कृपा हैल।)

(श्री) कमलाकान्त चक्रवर्त्ती वनमाली पण्डित-ख्याति
पाइलेन सङ्ग दोँहाकार ॥१८॥

(राधा) कुण्ड हते प्रकाशित '(भव) कूपे जीवेर गति' चित्र
दोँहार निकट हइते पाइया।
ग्रन्थ-चित्र आस्वादने मग्न हय मने प्राणे
गृहत्याग निश्चय करिया ॥१९॥

अवशेषे आइल लग्न हइया वैराग्ये मग्न
छिन्न करि संसार-विषय।
एकदा एकान्त प्राणे उपनीत व्रजभूमे
करिलेन राधाकुण्डाश्रय ॥२०॥

"श्री कुञ्जबिहारी दास" सुनियत जाँर वास
(श्री) कुण्डतीरे भजन-साधने।

(श्रीराधादास्ये जार आशे। श्रीराधाकुण्डतटे जार निवास।)

ताँर दरशन पाइया ना जानि कि करे हिया
पूरब सम्बन्ध जागे प्राणे ॥२१॥

ताँर पुण्य सङ्गगुणे बाढ़े रति दिने दिने
जाते हय वाञ्छित पूरण।
तिँह हइया सदाशय दिला नाम-मन्त्राश्रय
(एबे) अपतित स्मरण-मनन ॥२२॥

(सर्व) प्राप्तिमूला गुरुकृपा भोग हय निशि दिवा
से तो आर बलिबार नय!

भावे भावे निरजने श्रीभागवत-आस्वादने
सुसिद्धान्त अन्तरे जागय ॥२३॥

शान्तिपुर-पुरन्दर श्रीअद्वैत-वंशधर
गोस्वामिजी श्रीराधाविनोद।
श्रीभागवतेर व्याख्या '...अमृतवर्षिणी' आख्या
जाहा शुनि सज्जन-आमोद ॥२४॥

से अमृत-वरिषणे तोषे जत भक्त जने
अनुगत हय अगणन।
(ताँर) मुखे भक्ति-कथा शुनि पाषाणेओ बहे पानि
जाने जत अनुभवी जन ॥२५॥

(श्रीगुरुदेव आज्ञा दिलेन। श्रीभागवत अध्ययने मनने प्रचारणे, श्रीगरुदेव-आज्ञा दिलेन।)

जन्मभूमे व्रजे ताँर गतागति बारबार
माझे माझे गुरुसङ्गे वास।

(पुनः पुनः व्रजे आसे। नाहि गृहासक्तिलेशे। पुनः पुनः व्रजे आसे। दारागृह मने नाहि वासे, पुनः पुनः व्रजे आसे)

चित्त क्रमे व्याकुलित चिन्ते एबे अविरत-
वैराग्य-याजने अभिलाष ॥२६॥

श्रीगुरु-चरण पाशे निवेदि से अभिलाषे
लभिलेन तबे 'वेशाश्रय'।
दिव्यलग्ने विधिमते 'अमूल्य रतन' हते
'श्रीअनन्तदासे'र विजय ॥२७॥

(आश्विन शुक्लपक्षे चतुर्थी दिने, लभिलेन वेषाश्रय। सिद्धबाबार पुण्य तिथिते, लभिलेन-वेषाश्रय। 1952 साले लभिलेन वेषाश्रय। नाम हैल अनन्त दास। राधादास्ये जार आश। नाम हैल अनन्त दास।)

पञ्चायेत घेराय वास सतत ग्रन्थ-अभ्यास
नित्य परिक्रमे गिरिराज।
छत्रे आर माधुकरी वृत्ति स्मरण-सुखेते स्थिति
साधुसङ्गे सतत उल्लास ॥२८॥

(पण्डित) श्रीकृष्णचरण दास श्रीमद् भागवत दास
गुटिका बाबा श्रीगोपाल दास।
(बाबा) दीनशरण दास आदि जत सबाकार अनुगत-
हइया साधे विद्यार विलास ॥२९॥

व्याकरण-वैष्णव दर्शन नाना शास्त्र अध्ययन
(श्री) भागवत आदि भक्तिग्रन्थ।
सबेते निष्णात हइला सब अधिगत कैला
लीला-स्मरणेओ परिणत ॥३०॥

गुरुकृपा ताँरे निति वैष्णव जनेर प्रीति
आर सदा साधुसङ्गोल्लास।
साधने-मनने-ध्याने कालक्षेप अनुदिने
(श्री) कुण्डतटे नियत निवास ॥३१॥

एबे गुरु आज्ञामते हरिकथा-प्रसङ्गेते
हेथा सेथा ताँर पाठक्रमे।

(शास्त्र अध्ययन कैले, व्याकरण अध्ययन कैले। वैष्णवदर्शन अध्ययन कैले, आद्य मध्य उपाधि क्रमे वैष्णवदर्शन-अध्ययन कैले। श्रीमद् भागवत अध्ययन कैले, दास गोस्वामी समाधि पाशे, भागवत अध्ययन कैले। रससिद्धान्त श्रवण कैले-श्रीदीनशरण दास बाबा पाशे (बाबा) उज्ज्वलनीलमणि, वृहद्भागवतामृत, श्रीकृष्णभावनामृत श्रीदीनशरण बाबार पाशे, प्रीति सन्दर्भेर सिद्धान्त, श्रीदीनशरणदास बाबार पाशे। श्री गोपालदास बाबार पाशे, गौरगोविन्दलीलामृत गुटिका-लीलास्मरण पद्धति, -सिद्ध बाबार आनुगत्ये, श्रीगौरलीलार आनुगत्ये।)

'भजन कुटीरे' आर 'भागवत भवन' सार
'श्रीगोविन्द मन्दिर' अङ्गने ॥३२॥

'जाह्नवा-अङ्गने' जाय सेथा हरिकथा गाय
कभु राधामाधव मन्दिरे।

(श्रीगुरुदेव आज्ञा दिला, कर वैष्णवसेवा, श्रीहरिकथा दिये,-कर वैष्णवसेवा, -एइ तोमार साध्यधन, कथाय तोष वैष्णवजन, एइ तोमार साध्यधन।)

महाप्रभुर प्राङ्गणेते (कभु) हरिकथा-रसे माते
जे शुनेछे किबा कब तारे ॥३३॥

(नियमसेवाय नानास्थाने अतीव आवेग भरे, दामोदर व्रते कार्त्तिक मासे, अतीव आवेग भरे, मङ्गल आरति करे,-नित्य जाह्नवा मन्दिरे, निशान्त कीर्त्तन श्रवण करे, नित्य निशान्ते परिक्रमा करे, अतीव आवेग भरे।)

श्रीव्रजभूषण दास माद्राजी श्रीकृष्णदास
बाबा राधारमण दास आर।
महान्त श्रीजयनिताइदास (बाबा) श्रीगौरगोपाल दास
परमानन्द दास-परचार ॥३४॥

(श्री) नृसिंह बल्लभ गोस्वामी रसिक पण्डित मुकुटमणि
वृन्दावने जाँहार निवास।
प्रभुपाद प्राणकिशोर नित्यानन्द-वंशधर
पाठ शुनि सतत उल्लास ॥३५॥

(प्रभुपाद तिनकोड़ि गोस्वामी, श्रीभूपेन्द्रनन्दन प्रेमी, निताइचाँद गोस्वामी से हय। भवे भले निमगण, सबार आकुल मन। राधादास्य सबे आस्वादय।)

(गोस्वामी) तरुणकृष्ण, मुरलीमोहन गङ्गावंश्य अनादिमोहन
भक्ति राज्ये स्तम्भ-तुल्य जन।

व्रजे किंवा गौड़देशे तव पाठ श्रवणाशे
सबे लुब्ध, मुग्ध, निमगन ॥३६॥

निरन्तर ग्रन्थ-सङ्गे इति-उति फिरे रङ्गे
श्रवणे भकत जनानन्द।

(श्रीगौड़मण्डले जागा, नाना स्थाने भक्तेर गृहे गिया।)

अनर्गल पाठ-रसे सबे मजे, डुबे, भासे
प्रभु से श्रवण-तरुकन्द ॥३७॥

गोस्वामी ग्रन्थ-आस्वादने कत स्फूर्त्ति ताँर प्राणे
वितरिते सेइ कथा-जत।
(श्री) सनातन गोस्वामी-कृत ग्रन्थ हइल सम्पादित
नाम- 'वृहत् भागवतामृत' ॥३८॥

इति मध्ये अकस्मात् बिना मेघे वज्रपात
श्रीगुरुदेवेर सङ्गोपन।

(शुनि तुमि मूरछित हैले, हाय विधि कि करिले- श्रीगुरुदेवे काड़ि निले, हाय विधि कि करिले।)

निरन्तर हाय हाय! फुकारि कहा ना जाय
से विरह सागरे मज्जन ॥३९॥

तबे कथो दिन परे गेला कलिकातापुरे
शोभाबाजारेते शुभ स्थिति।

(श्यामाकान्त वसाक सङ्गे, श्रीगुरुदेवेर विरहोत्सवे, श्यामाकान्त वसाक सङ्गे।)

(श्री) निताइचाँद गोस्वामी ह'न भजने श्रीमन्तजन
पाठ-व्यपदेशे वास तथि ॥४०॥

(श्री नित्यानन्द जन्मोत्सवे, माघीशुक्ला त्रयोदशीर, श्रीनित्यानन्द जन्मोत्सवे, श्रीगौरपूर्णिमा दिने, प्रतिवर्ष समरेन्द्र राय गृहे)

कलिकाताय नानास्थाने पुरुलिया, वनग्रामे
कखनओ आसाम-शिलचरे।
मठ-मन्दिर-भक्तघरे हरिकथा कहिबारे
तिँह देखि नियत विहरे ॥४१॥

करि हरिकथा-श्रवण धन्य भेल कतजन
श्रीचरणे शरण लइल।
महतेर कृपालेशे नाम-मन्त्र उपदेशे
तारा सबे कृतार्थ हइल ॥४२॥

सुशील; सहिष्णु, शान्त वरेण्य, वदान्य, दान्त
भक्ति-अङ्ग याजने तत्पर।
सदाचार-परायण, साथे अनुगतजन
श्रीदयाल दास, श्रीसखीदास आदि सहचर ॥४३॥

(विशेषतः रहे कलिकाताय, सङ्गे सखीदास जाय, सङ्गे केशव दास जाय, नाना शिष्य सेवक जाय, सङ्गे दयाल दास जाय, विशेषतः कलिकाताय।)

गोस्वामी ग्रन्थ प्रचार अपतित व्रत ताँर
करेन सकलि सम्पादने।
सदानुशीलने मग्न मनसा... सतत लग्न
आचार्य गणेर श्रीचरणे ॥४४॥

'श्रीराधारससुधानिधि' 'विलाप कुसुमाञ्जलि' आदि
'स्तवावली' 'कृष्णकर्णामृत'।
'श्रीमाधुर्य कादम्बिनी' 'रागवर्त्मचन्द्रिका' जानि
'प्रेमभक्तिचन्द्रिका'-समीहित ॥४५॥

(श्रीमन्) महाप्रभुर 'शिक्षाष्टक' (से जे) भक्तेर अभिभावक
'उत्कलिकावल्लरी' प्रचुर।
'गीतपञ्चक', 'भ्रमरगीत' अनुशीलनेते हित
'रसदर्शन' आदि ग्रन्थ शूर ॥४६॥

आपनार अनुभूत प्रकाशिला ग्रन्थ जत
लइया श्रीरघुनाथेर शरण।
'साध्य साधनतत्व विज्ञान' 'तिनवाञ्छा' अभिधान
'मञ्जरी स्वरूप जाते निरूपण' ॥४७॥

'श्रीनित्यानन्दमहिमा' कथा ताँर लीला-गुण गाथा
'श्रीगौरगोविन्द-लीलामृत'।
से 'रसदर्शन' मुख्य हय 'परतत्वेर साम्मुख्य'
जाते भक्तकुल विमोहित ॥४८॥

'श्रीकुण्ड-ऐतिह्य' आर सकलि सिद्धान्त सार
'लीलारसप्रसङ्ग' वर्णन।
'गुरुतत्व', 'भक्ततत्व' '(श्री) कृष्णतत्व', 'नामतत्व'
'श्रीराधातत्व' हइल प्रकाशन ॥४९॥

'रसतत्व', 'प्रेमतत्व' 'रागानुगा भक्तितत्व'
'प्रेयोजनतत्व निरवधि'।
जीवेर मङ्गल तरे रचिलेन प्रीतिभरे
'श्रीगुरुकृपा' कृपार अवधि ॥५०॥

भवरोग से-दुरन्त दूरिते करिला ग्रन्थ
'साधुमुखे हरिकथा' नाम ।

(प्रेमभक्ति लभे, तार ग्रन्थ पठने हय, प्रेमेर सञ्चार। पुलक कम्प अश्रुधार, पठने हय प्रेमेर सञ्चार, तार ग्रन्थ पठने हय प्रेमेर सञ्चार॥ लीलारसे अधिकार हय, आस्वादने अधिकार हय।)

श्रवणे-पठने हय आत्यन्तिक शुभोदय
प्रेमभक्तिलभे अनुपाम ॥५१॥

(जानाइलेन एइसब ग्रन्थ द्वारे, सब तत्व जानाइलेन, कलिहत जीवेर लागि! सब तत्व-जानाइलेन। राधादास्य दिबार लागि, सब तत्व जानाइलेन। के बा जानाइत! यदि ग्रन्थ ना लिखितेन, के बा जानाइत! यदि हरिकथा ना बलितेन, केबा जानाइत। यदि हरिकथा ना बलितेन।)

चरिते-स्वभावे ताँर देखि पूर्ण अधिकार
(श्री) कुण्डवासी जतेक सुजन।
दिलेन दायित्वभाव (श्री) कुण्ड-रक्षा करिबार
(ताँर) समर्पिला महान्त-आसन ॥५२॥

श्रीदास गोस्वामी-पद भक्तिराज्ये सुसम्पद
हृदे धरि सेइ से चरण।
श्रीकुण्डेर सेवा करि धन्य भेल जगभरि
हैल से महिमा-प्रचारण ॥५३॥

कार्त्तिक मासेर वेले प्रत्यह 'पाठे'र काले
श्रवणाङ्ग करिया याजन।
बर्हिमुखे जने कत करेन उन्मुख चित
जाने जत भाग्यवन्त जन ॥५४॥

निरन्तर लीलास्वादे सतत अन्तर काँदे
से लीलाय प्रवेशेर तरे।
एकान्ते मनने थाके सदा स्वामिनी-सदने राखे
निज मन-प्राण-देहटिरे ॥५५॥

(कबे पाब स्वामिनीर चरण, करे करिबेन-आकर्षण, पाब छिन्न करि भव बन्धन। दिबेन सेवा अधिकार। जाहा मोदेर साध्य सार। कबे पाब अधिकार।)

चौद्दश' पँचिश सने अन्नकूट-पर्व दिने
देखि अर्द्धबाह्यदशा ताँर-
जतेक सेवक जने आने ताँरे वृन्दावने
करिबारे चिकित्सा ताँहार ॥५६॥

श्रीकुण्डे आसार तरे आकुलि-विकुलि करे
अन्यस्थाने ना चाहे रहिते।
जानान इङ्गितभरे आपनार सेवकरे
किन्तु केह ना बुझे इङ्गिते ॥५७॥

'तृतीयाय' रामकृष्णमिशने आइला चिकित्सा-कारणे
बाह्ये अचेतन-प्राय तेँह।

(श्रीरामकृष्ण मिशने, रात्रे गेला वृन्दावने, महारासस्थली-गोविन्दस्थली वृन्दावने, महायोगपीठ सदने, रात्रे आइला वृन्दावने)

पर-'चतुर्थीरि' प्रातः वेले निकुञ्जे प्रवेश कैले
छाड़ि निज जागतिक देह ॥५८॥

(अरुणा मञ्जरी रूपे, महायोगपीठे उपनीत। लवङ्ग मञ्जरीर साथे हइलेन उपनीत। स्वामिनीर सेवा तरे, हइलेन उपनीत। श्रीराधाकुण्डे ललितानन्दद कुञ्जे, हइलेन उपनीत। कार्त्तिकी शुक्ला चतुर्थीरि प्राते अदर्शन हैला अकस्माते, कहिते प्राण विदरिया जाय- कि कहि कहिते ना पारि हाय, प्राण विदरिया जाय। विलासाम्बुज कुञ्जे हइलेन उपनीते। स्वामिनीर सेवार तरे।)

दामोदर मास आर शुक्लपक्ष रविवार
हाहाकार उठिल करुण।
हाय विधि कि करिलि सरवस ह'रे निलि
दिलि दुख् अति निदारुण ॥५९॥

(प्रभातकाले हाहा करे। सबे कान्दे अनिवार। कराघात करि कान्दे। जत चरणाश्रित जन। सबे करेन क्रन्दन, आर तोमाय पाब

ना मोदेर भाग्य मन्द, हैल मोदेर भाग्य मन्द। मो हाराइलाम तोमार सङ्ग, आर मोरा पाब ना। -तोमार सङ्ग प्रसङ्ग, आर मोरा पाब ना, तोमार सङ्ग प्रसङ्ग, आर मोरा पाब ना, सङ्ग प्रसङ्ग आर मोरा पाब ना, ना देखिया से चाँद मुख, विदरिया जाय बुक, बुक विदीर्ण हय। मुखे कथा ना बाहिर हय।)

वैष्णव महान्त जत गुणग्राही शिष्य-भक्त
(करे) निरन्तर अश्रु-वरिषण।
मृतकल्प सब जन हाराये सर्वस्व धन
(ए) कहिबार नहे विवरण ॥६०॥

तुमि से निकुञ्जे पशि सेविछ युगल-शशी
गुरुरूपा मञ्जरी-आदेशे।
एथा मोरा दिशाहारा अबाध नयनधारा
अन्धकार देखिया दिवसे ॥६१॥

(आमादेर छाड़ि दूरे गेले, कोथा तुमि लुकाइले, -केन तोमाय देखिना, केन धरा दाओ ना, केन तोमाय देखिना, केन धरा दाओ ना। मोदेर मन निवारण माने ना, कत बुझाइ मन निवारण माने ना। विपथे मन सदाइ चले। ताइ कि प्रभु लुकाइले। अभिमाने कि लुकाइले। तोमार कथा शुनि नाइ बोले। अभिमाने कि लुकाइले-)

शुनिनि तोमार कथा दियेछि मरमे व्यथा
ता ब'ले कि आमादेर छाड़ि।
जेते हबे दूरे चले ए कथा कबे के बले
भेबो देखो उगो गुरु-हरि ॥६२॥

एबे आर कि कहिब मायामुक्त काया नब
शत सेवा-सुखे तव वास।

(तुमि सेवाराज्ये विहरिछ। निज गुरुदेवेर सने। तुमि सेवाराज्ये विहरिछ। एथा मोरा कँदे मरि। तुमि सेवाराज्ये विहरिछ।)

ए अभाजनेर मन नाहि जाने निवेदन
निज गुणे रेखो निज-पाश ॥६३॥

जय जय प्रभु मोर स्नेहेर पाथार!
हेन प्रभु कोथा गेला ना देखिये आर!!

संसार-अन्धकार हते काढ़ि अमायाय।
आनिले आपन पाशे अहेतु कृपाय॥

धाम नाम, मन्त्राशय, वेशाशय दिया।
रेखेछिले तव पाशे आपन करिया॥

गोस्वामिगणेर जत सिद्धान्त सकल-
मानवजीवने जाते एकान्त मङ्गल॥

काछे डेके कत ना प्रसङ्ग-प्रवचन।
निज गुणे शुनायेछ करिये यतन॥

स्नेहभरे बलियाछ कत शतबार-
'जनम सार्थक कर' 'नाम' कर सार॥

महाप्रभुर भक्तगणेर वैराग्य प्रधान।
जाहा देखि परसन्न-गौर भगवान॥

चिन्तामणि सम ताहा धरह हृदये।
अनर्थ सागर तरो गुरुपदाश्रये॥

हरि-गुरु-वैष्णव अभिन्न प्रकाश।
अभिमान परिहरि हओ नित्यदास॥

श्रीदास गोस्वामिपादे अन्तरे रखिया।
अपतित याजनेते पूर्ण कर हिया॥

जेखाने जेभावे थाक, मानसी-सेवाय।
एकान्त अन्तरे ताँरे सेव अमायाय॥

एबे आर से सकल उपदेश करि।
के मोरे करिबे रक्षा करुणा विस्तारि॥

कोथा गेले तोमा' पाब, बले कोन जने!
दिवसे आँधार देखि तोमार विहने॥

मरमेर व्यथा मोर कारे बा जानाब।
कार मुख हते, जिज्ञासार उत्तर पाब॥

कलिर ए कोलाहल कहिबार नय-
निजगुणे रक्ष मोरे ओ गो दयामय॥

मातृ-पितृ स्नेहधारे सोहागे शासने।
कि आर राखय एबे मो' अभागा जने॥

ना चाहिते सब दिये करेछ पूरण।
कोनओ अभावेर लेश राखनि कखन॥

शक्ति दिया राख ऐब तोमार शरणे।
(जेन) प्रति जन्मे गुरुरूपे पाइ तोमा' धने॥

एइ निवेदन नाथ! अन्तिमे आमार।
सेवा दिये रेखो मोरे, चरणे तोमार॥

(आमादेर अभावेर लेश राखनि कोन। सब अभाव करेछ पूरण,
दिया तत्व साध्य साधन। सब अभाव करेछ पूरण।)